मेजी पुनर्स्थापना

जापान Meiji Restoration

Evaluate the consequences following the opening of Japan

जापान में 1868 तक सारी शक्तियाँ शोगुनों के ही हाथ में था। सम्राट तो नाममात्र का होता था। उसके हाथ में वास्तविक शक्ति नहीं थी। बल्कि, देश की सारी शक्तियाँ बड़े-बड़े सामन्तों के हाथ में थी। पश्चिमी देशों से जो संधियाँ हुई थी, 1854 व 1858 की वह शोगुन सरकार ने ही की थी। शोगुन सरकार ने अमेरिका से जो संधी की थी जिसके परिणामस्वरूप जापान का व्यापारिक दरवाजा विदेशियों के लिए खुल चुका था। इन संधियों के द्वारा जापान का दरवाजा तो खुल गया लेकिन ही जापानियों के लिए राष्ट्रीय अपमान की बात अवश्य थी। लेकिन इससे जापान को काफी फायदा हुआ। यदि जापान का व्यापारिक दरवाजा नहीं खुलता तो अवश्य ही जापान का आधुनिकीकरण नहीं होता। पाश्चात्य सम्पर्क ने जापानियों को राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ाया।

सम्राट के हाथ में वास्तविक शक्ति का केन्द्रीकरण

विदेशियों के साथ सम्पर्क करने के दौरान हुआ शासन प्रणाली की कमजोरियाँ प्रकट हो गयी थी। इसका सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि राज्य की वास्तविक शक्ति सम्राट के हाथ में चली गई। पहले जो दो संधियाँ हुई थी उस संधि को शोगुन ने अपनी जिम्मेवारी पर की थी। परन्तु बाद की समस्याओं के लिए वह सम्राट की निर्णय चाहता था। जापान के जितने भी सामन्त तोकुगावा को छोड़ कर वे विदेशियों को जापान से मार भगाना चाहते थे। वे जापान की पृथकता चाहते थे, तथा इस हालत में जापान की इन सामन्तों की स्थिति, जापान के राष्ट्रहित के लिए नहीं थी। बल्कि विदेशी सम्बन्ध को तोड़ना चाहते थे तथा तोकुगावा शोगुन संस्था को खत्म करना चाहते

Scanned with CamScanner

शोगुन को नीचा दिखाना चाहते थे। शासक शोगुन
इस दुविधा में पड़ा हुआ था कि एक तरफ से
तो सम्राट तथा अन्य सामन्तों के तरफ से विदेशियों
को हटाने की माँग थी। दूसरी तरफ विदेशियों
के तरफ से संधि को कार्यान्वित करने का दबाव था।
अब ऐसी स्थिति में उनके वक्तव्य "विरोधाभासपूर्ण" होने
लगे। एक ओर उसने सम्राट को यह आश्वासन दे
रखा था कि तैयारियाँ होते ही विदेशियों को खदेड़
दिया जायेगा। दूसरी ओर विदेशियों को यह
आश्वासन दिया था कि जनता के शान्त होते
ही संधि के सभी शर्तें लागू कर दी जायेंगी।
1862 इसी बीच एक घटना घटी जिससे कि सत्सूमा
कुल के लोगों को यह समझ में आयी कि जापान
पाश्चात्य देशों के सामने कितना पिछड़ा हुआ है।
एक दिन सत्सूमा वंश के राजकुमार जिस रास्ते
से आ रहा था उसी रास्ते से रिचर्डसन
नामक एक अंग्रेज व्यापारी नहीं किया इससे सत्सूमा
के अनुचरों ने क्रोधित हो कर रिचर्डसन की हत्या
कर दी। अंग्रेजों ने जापानी सरकार से क्षति-
पूर्ति माँगी। इस पर शोगुन आना-कानी किया
परिणामस्वरूप अंग्रेजी सेना की एक टुकड़ी
सत्सूमा की राजधानी कागोशिमा पर तोप लगा
कर गोला बारी की। इस घटना से उन्हें
अपने शस्त्रास्त्र की कमी महसूस हुयी। और
विदेशियों के प्रति उनकी दृष्टि बदल गयी। इस
घटना इस घटना से विशेषकर उनकी सैनिक
दुर्बलता प्रकट हो गयी। और यह भी स्पष्ट
हो गया कि शोगुन का जो अपनी जनता पर
अधिकार नहीं है वह अपनी जनता की
रक्षा विदेशियों से भी नहीं कर सकता।

Scanned with CamScanner

इसी तरह की एक और घटना चोशू कुल के साथ घटी। चोशू कुल के सामन्त ने 1863 में अपने आदमियों को यह आदेश दिया कि उनके कुल के समुद्री तट पर कोई भी विदेशी जहाज नहीं आये तथा "शिमोनोसेकी" की खाड़ी से हो कर जो भी जहाज गुजरे उन पर गोलाबारी की जाये। सर्वप्रथम इसका शिकार अमेरिकी जहाज हुआ। अमेरिका ने तत्काल युद्धपोत भेज कर इसका बदला ले लिया। इतना ही नहीं अमेरिका के सहानुभूति में अन्य विदेशियों ने 1864 में संयुक्त अभियान की घोषणा की। जिसमें फ्रांस ब्रिटेन, तथा अमेरिका सम्मिलित था। इस घटना से विदेशियों के प्रति चोशू कुल की दृष्टि बदल गयी।

इन घटनाओं से शोगुन की शासन प्रणाली की कमजोरी का पर्दाफाश हो गया, अपनी जनता तथा विदेशियों के सामने। अत: विदेशी सभी संधियों का अनुमोदन सम्राट से चाहने लगे। 1866 में विदेशियों ने सम्राट के समक्ष यह शर्त रखी कि अगर सम्राट इन संधियों का अनुमोदन कर दें तो चोशू कुल पर लगाया गया जुर्माना वह माफ कर देगा। चूँकि चोशू कुल की सम्राट तक पहुँच भी होने के कारण विदेशी अपने उद्देश्य में सफल रहे।

इसी बीच सम्राट की मृत्यु के बाद जापान में नया सम्राट 1867-68 में मुत्सुहितो नामक व्यक्ति जो मेजी के नाम से सम्राट बना। वह देश की शासन सत्ता को अपने हाथ में लेना चाहता था।

Scanned with CamScanner

शासन शक्ति को पूरी तरह सम्राट के हाथ में
केन्द्रीत करने के प्रयास में स्सुमुरा, नकयुगा,
हिजेन तथा तोसा के सामन्त कुलों ने आशुगा
किबी। हीजन ने इस समय तोकुगावा के
शोगुन भी इस समय एक बुद्धिमान व्यक्ति था
उसने विरोध के सिद्धान्त को आपान की भी
विभाजितों पर और किया और शोगुन पद
से त्याग पत्र दे दिया इस प्रकार 1842 तक
सम्राट की शक्ति प्रबुद्ध हो गयी।

सामन्ती व्यवस्था का अन्त शासन

सत्ता अपने हाथ में ले लेने के बाद सम्राट के
सामने प्रमुख समस्या थी जापान को एक सुदृढ़
केन्द्रीय शासन देना और
[illegible] केन्द्रीय शासन की सबसे बड़ी बाधा थी
केन्द्रीय शासन की सबसे बड़ी बाधा थी
सामन्ती पद्धति। जब तक सामन्ती सरदार
शक्ती शासन ऐसे ही शासन [illegible] सेना के
व्यक्तियों के बीच रहते थे, तब तक सत्ता का
प्रभावकारी केन्द्रीकरण हो ही नहीं सकता था।
इस लिये इस पद्धति को खत्म समाप्त करने के
लिये सम्राट ने एक राजकीय आज्ञा पत्र
प्रकाशित की जिसमें निम्नलिखित बातें थी —

(1) 1868 में मैजी ने यह व्यवस्था की कि हर
सामन्ती सरदार के क्षेत्र में एक राजकर्मचारी
होगा, जिसकी नियुक्ति केन्द्रीय सरकार करेगी।
इससे उस जागीर के सामन्त तथा जनता को
यह अनुभव होने लगी उस जागीर की प्रजा
सम्राट के प्रत्यक्ष अधीन है।

(2) 1869 सम्राट ने किडो साइगो आदि
नेताओं राजा समाप्ती शस्त्रुमा, चोशु आदि
सामन्तों का उदाहरण देकर प्रेरित किया कि वे ही अपनी

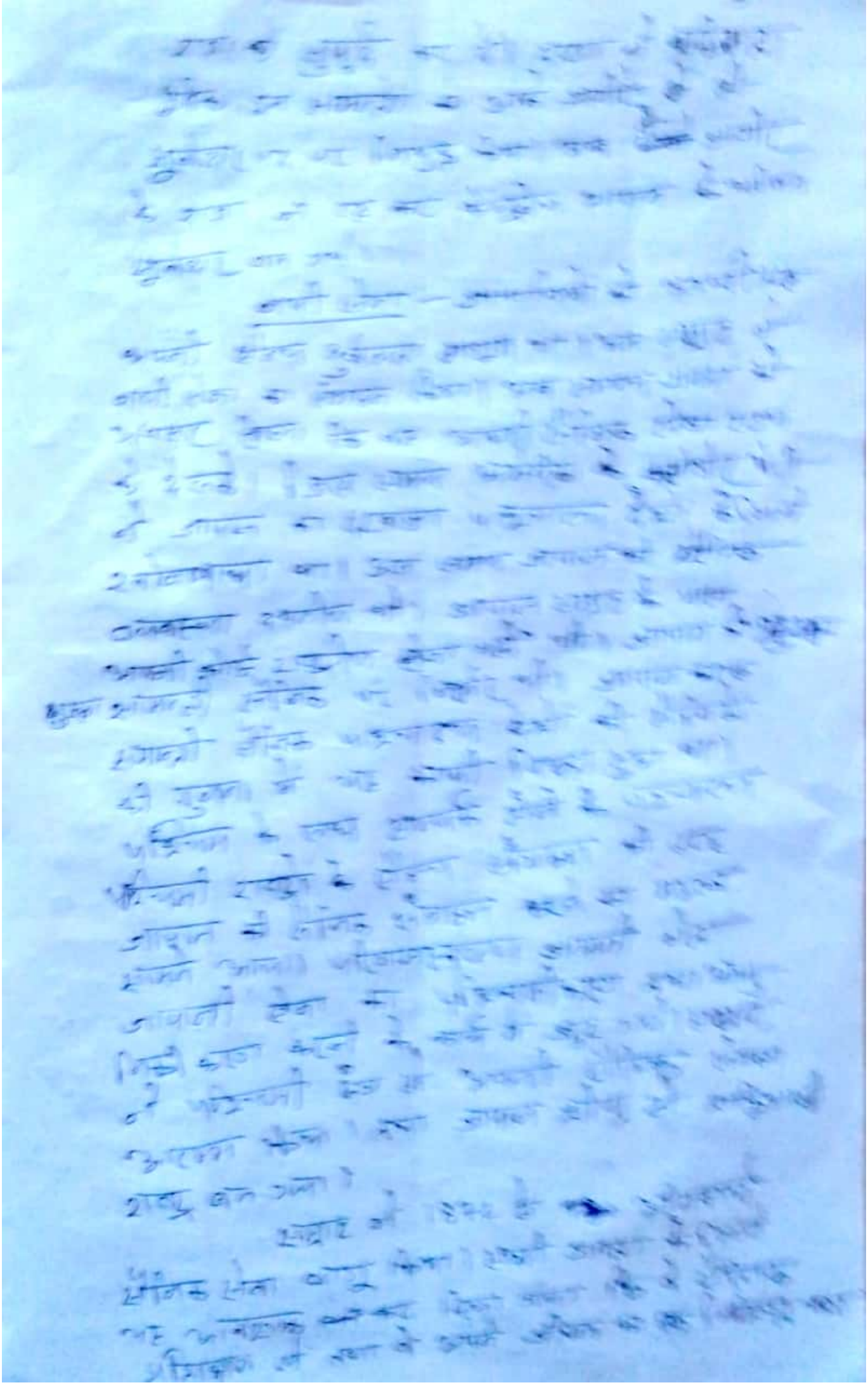

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Scanned with CamScanner

सेना में अनुशासन लाया गया। सेना में सब पदों का निर्धारण योग्यता के आधार पर किया जाने लगा। सम्राट ने एक राष्ट्रीय सेना का संगठन की दृष्टिकोण से एक सैनिक मामलों के विभाग की स्थापना की। (1869 में) इस विभाग की स्थापना का उद्देश्य सामन्तों की सैनिकों का केन्द्रीय सेना में विलय कर राष्ट्रीय सेना निर्माण करना था। ओमुरा, मासुजीरो ने 1869 में फ्रांसीसी सेना के संगठन को आदर्श मान कर सैनिक सुधारों की योजना प्रस्तुत की। इसमें जापान की सैनिक व्यवस्था के लिये ~~निम्नलिखित~~ निम्नलिखित सुधारों पर जोर दिया।

(1) सैनिक अफसरों के प्रशिक्षण के लिये एक सैनिक स्कूल खोला ~~जाना~~ जाना चाहिये।

(ii) सेना के लिये सार्वजनिक भर्ती की व्यवस्था की जानी चाहिये। इन सब सुधारों के कारण जापान कुछ दिनों में इतना अधिक शक्तिशाली बन गया कि सर्वप्रथम चीन फिर रूस को (1904) में पराजित किया। विश्व युद्ध के पूर्व जापान को अन्य बड़ी शक्ति कहा जाने लगा।

शासन तथा संविधान - 1868 में शासन तन्त्र अपने हाथ में लेते हुए मैजी ने कहा था कि जापान में एक विधान सभा की स्थापना की जायेगी तथा शासन सम्बन्धी नीति का निर्धारण इसी सभा की सम्मति से की जायेगी। 1882 में सम्राट ने मा0 (इतो) को पश्चिमी देशों की वैधानिक पद्धतियों के अध्ययन के लिये यूरोप भेजा। यूरोप से लौट कर इतो (इ0) ने जो सम्राट को प्रतिवेदन (Report) दिया जो निम्नवत था -

(1) जापान में सरकार राजतन्त्रात्मक हो।

(2) जिन सामन्तों ने अपनी-अपनी रियासतें

को सम्राट की शक्ति [illegible] परिस्थितियों में गौणस्थान दिया है [illegible] रखनी चाहिये। जापान में [illegible] प्रतिनिधि लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली की ओर [illegible] बढ़ती जा रही है उसको भी [illegible] तथा जनता को प्रतिनिधित्व [illegible] शासन में [illegible] स्थान मिले। जापान के [illegible] शासन प्रणाली अपनाने में डेरी (Diet) [illegible] अमेरिका का [illegible] रूप में प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली [illegible] है। इंग्लैण्ड में भी राजा की [illegible] परन्तु डेरी (Diet) ने शासन प्रणाली [illegible] की शक्ति अक्षुण्ण रखी गई थी। [illegible] प्रजा की शासन प्रणाली का [illegible] उसके अनुसार प्रजा ही तत्कालीन [illegible] ऐसा देश था जिसकी शासन प्रणाली [illegible] की परिस्थितियों में [illegible] 1889 में सम्राट ने अपने [illegible] के अनुसार जापान को एक नया संविधान [illegible] संविधान दो विचारों के आधार पर [illegible] पुनःस्थापना। इसके अनुसार [illegible] स्रोत और सभी उपहार अनुग्रह का [illegible] था। इसका [illegible] अनुसार वास्तविक शक्ति का [illegible] अभिकर्ता (Agent) करते थे। [illegible] प्रधान सम्राट ही था और उसकी [illegible] पवित्र तथा अनुल्लंघनीय थी। [illegible] कर्मियों की नियुक्ति तथा [illegible] का अधिकार [illegible] एवं वेतन निर्धारण [illegible] वैदेशिक अधिकार भी

भी सम्राट को ही था। ~~सम्राट को शासन में~~
युद्ध तथा संधि करने का अधिकार राजा को ही था।
सम्राट को शासन में सहायता ~~करने~~ के लिये एक
मंत्रिमंडल की व्यवस्था की गयी। मंत्रिमंडल के
सदस्य राजा द्वारा चुने जाते थे तथा वे राजा
के प्रति ही उत्तरदायी होते थे। 1889 के संविधान
के अनुसार एक संसद की भी व्यवस्था की
गयी जिसके दो सदन होते थे लार्ड सभा तथा
लोक सभा। लोक सभा का सदस्य जनता द्वारा
निर्वाचित होता था। परन्तु मत देने का अधिकार
बहुत सीमित रखा गया था। संसद की बैठक
वर्ष में एक बार अवश्य बुलायी जाती थी, ~~और~~
आवश्यकता पड़ने पर इसकी बैठक बार-2
बुलायी जा सकती थी। कोई भी कानून [illegible]-
[illegible] धन विधेयक बिना संसद की स्वीकृति
का लागू नहीं हो सकता था। संसद द्वारा
पारित विधेयक पर सम्राट को Veto (वीटो)
लगाने का अधिकार था। इसमें प्रशा का
नहीं बल्कि अमेरिका का नकल किया गया था

शेष अगले class में

Scanned with CamScanner